Dr Priti Ranjan
Deptt of History
H. D. Jain College
B. A Part - I
Paper - 2 Topic - James first

⇒ जेम्स प्रथम का संसद के साथ कैसा सम्बन्ध था ?

24 मार्च 1603 को महारानी एलिजाबेथ का निधन हो गया। एक सप्ताह के बाद स्कॉटलैंड की रानी मेरी का पुत्र जेम्स छठा इंगलैंड की गद्दी पर बैठा।

जेम्स प्रथम और संसद के साथ उसका सम्बन्ध ⇒

जेम्स ने अपने राज्यकाल में चार बार संसद का अधिवेशन बुलाया। 1604 में उसने पहली बार संसद का अधिवेशन बुलाया। दोनों के बीच यहीं से संघर्ष आरम्भ हुआ। निर्वाचन - सम्बन्धी घोषणा करते हुए जेम्स ने यह कहा था कि कोई भी व्यक्ति जो कानून के बाहर अथवा कट्टर धार्मिक विचार रखने वाला है वह लोकसभा का सदस्य नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त निर्वाचन - सम्बन्धी झगड़ों का फैसला राजा के न्यायालय में होगा। जब 1603 में जेम्स प्रथम इंगलैंड का राजा हुआ तो प्यूरिटनों ने उसका अच्छा स्वागत किया क्योंकि उन्हें उससे बड़ी आशा थी। जब हैम्पटन कोर्ट में मिला तो प्यूरिटनों का विश्वास था कि वह उनके प्रति अवश्य ही सहानुभूति प्रकट करेगा। इसी विश्वास से उन्होंने एक प्रार्थना - पत्र पेश किया। लेकिन प्यूरिटनों की आशा पर पानी फिर गया। जेम्स प्रथम उग्र एंग्लिकन चर्च का समर्थक हो गया। उसे यदि बिशप न हो तो राजा नहीं सिद्धान्त पर बड़ा विश्वास था। वह जानता था कि यदि बिशप की सत्ता समाप्त कर दी जाती है तो राजतंत्र का बना रहना असम्भव है। निस्संदेह वह बिशप की सहायता का इच्छुक था। फिर क्या था विद्रोह अपना दरवाजा खोल चुका था। जब 1604 ई० के प्रथम पार्लियामेंट में गोडविन नामक व्यक्ति निर्वाचित हुआ जिसे जेम्स की एक घोषणा के अनुसार (जिसमें अपराधियों को पार्लियामेंट के सदस्य के रूप में चुने जाने की मनाही थी) पार्लियामेंट के सदस्य होना गैरकानूनी था। लोकसभा ने इसका बड़ा विरोध किया और कहा कि निर्वाचन - सम्बन्धी झगड़ों का फैसला करना राजा का काम नहीं अपितु संसद का काम है। इस पर जेम्स ने कहा कि 'लोकसभा का सदस्य के सभी विशेषाधिकार राजा की ओर से मिलेंगे' उसने गोडविन की जगह फोर्टेस्क्यू (Fortesque) को लोकसभा का सदस्य बना

बना दिया। इन गतिरोधों के कारण लोकसभा ने राजा के सामने एक प्रार्थना-पत्र पेश किया। इसमें कहा गया कि उसके विशेषाधिकार जन्मसिद्ध हैं निर्वाचन-सम्बन्धी झगड़ों का निर्णय लोकसभा कर सकती है। उसके सदस्य स्वतंत्रता से बोल सकते हैं और वे लोकसभा में बोलने के कारण कैद नहीं किए जा सकते। अंत में राजा ने लोकसभा को चुनाव सम्बन्धी झगड़ों के निर्णय करने का अधिकार दे दिया। शीघ्र ही एक नया संघर्ष शुरु हो गया। जेम्स को धन की आवश्यकता हुई। परन्तु उसने संसद की स्वीकृति लेने के बदले अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग किया। उसने आयात-वस्तुओं पर अतिरिक्त चुंगी लगा दी। जॉन बेट नामक एक व्यापारी ने इसे देने से अस्वीकार कर दिया। लेकिन न्यायालय ने राजा के पक्ष में निर्णय दिया और उसे कर लगाने की छूट मिल गई। इस फैसले से उत्साहित होकर जेम्स ने बिना संसद की अनुमति लिए सभी व्यापारिक वस्तुओं पर चुंगी लगा दी।

1610 में संसद का जब अधिवेशन हुआ तो इसने इसका विरोध किया। जेम्स को यह बुरा लगा और उसने 9 फरवरी, 1611 को इसे भंग कर दिया।

इसके बाद जेम्स ने तीन वर्षों तक संसद का अधिवेशन नहीं बुलाया। धन जमा करने के लिए उसने कई साधनों का प्रयोग किया। लोगों से कर्ज और बड़ा जुर्माना लिया गया। उपाधियाँ बेची गई। राज्य की जमीन भी बेची गई। परन्तु आवश्यकतानुसार धन नहीं मिल पाया। अभी भी प्रति वर्ष दो लाख पौंड का घाटा था। अतएव 1614 में धन की मंजूरी के लिए संसद का अधिवेशन बुलाना पड़ा। इसने तुरन्त यह प्रस्ताव पारित किया कि राजा संसद की अनुमति के बिना कर नहीं लगा सकता है। यदि वह ऐसा करता है तो यह अवैध है। संसद ने यह भी बतलाया कि जब तक उसकी शिकायतें दूर न की जाएँगी तब तक वह धन की मंजूरी नहीं देगी। इस पर जेम्स ने बिगड़कर संसद भंग कर दी। चूँकि इस संसद ने कुछ काम नहीं किया इसलिए इसे एडल्स संसद (Addled Parliament) कहते हैं।

इसके बाद जेम्स ने सात वर्षों तक संसद नहीं बुलाई। धन जमा करने के लिए उसने बलात् कर्ज एकाधिकार विक्रय एवं उपाधियाँ बेची। किसी तरह खर्च चलता रहा परन्तु तीस वर्षीय युद्ध (1618-1648) में भाग लेने के कारण जेम्स को अधिक धन की आवश्यकता हुई। अतः एव 1621 में उसने तीसरी बार संसद बुलाई। इस पार्लियामेण्ट ने कई महत्वपूर्ण कार्य किये। इसने राजा के मन्त्रियों पर अभियोग लगाने का अधिकार प्राप्त किया और फ्रान्सिस बेकन पर रिश्वत लेने का महाभियोग चलाया। इस तरह इसने महाभियोग लगाने के अपने पुराने अधिकार को पुनर्जीवित किया जिसका 1458 से उपयोग नहीं किया गया था। बेकन ने अपने अपराध को मानते हुए कहा "मैं रिश्वत नहीं लिया बल्कि वह स्त्री मुझे भेंट स्वरूप धन दिया थी।" बेकन को जुर्माना और कैद की सजा मिली। किन्तु जेम्स ने उसे माफ कर दिया। संसद ने जेम्स की विदेश - नीति का भी विरोध किया। उस अवसर पर इंगलैण्ड की जनता और पार्लियामेण्ट स्पेन से युद्ध और फ्रेडरिक की सहायता करना चाहती थी। वह अपने पुत्र चार्ल्स की शादी स्पेन की कैथोलिक राजकुमारी इन्फैंटा से करना चाहता था। संसद ने इसका विरोध किया। इस पर जेम्स ने कड़े शब्दों में कहा कि संसद राज्य के गंभीर प्रश्नों पर बातचीत नहीं कर सकती है।

संसद ने 18 दिसम्बर 1621 को एक विरोध-पत्र पेश किया जिसमें कहा गया "स्वतंत्रता वयस्क मताधिकार विशेषाधिकार एवं संसद के श्रेष्ठाधिकार इंगलैंड के लोगों के प्राचीन और जन्मसिद्ध अधिकार हैं।" जेम्स विरोध-पत्र पढ़कर बिगड़ गया और संसद में ही इसे अपने हाथों से फाड़ दिया। उसने संसद को भंग कर दिया और संसद के कुछ सदस्यों को कैद कर लिया। जेम्स की चौथी संसद का अधिवेशन 1624 में शुरु हुआ। जब ~~चार्ल्स~~ जेम्स अपने पुत्र की सगाई स्पेन की राजकुमारी के साथ करने में असफल रहा, तब उसने युद्ध में भाग लेने का निर्णय लिया। और ~~इस समय~~ स्पेन से इसके लिए धन की आवश्यकता थी। संसद ने राजा को कुछ धन की मंजूरी दी। लोकसभा ने कोषाध्यक्ष मिड्ल सेक्स पर महाभियोग चलाया। इसके बाद संसद भंग कर दी गई। 1625 ई० में जेम्स की मृत्यु हो गयी। जेम्स के समय में राजा और पार्लियामेण्ट में झगड़ा आरम्भ हुआ।

इस झगड़े में निस्सन्देह पार्लियामेण्ट को सफलता मिली। पार्लियामेण्ट ने राजा के मन्त्रियों पर अभियोग लगाने का अधिकार प्राप्त कर लिया अपने अधिकारों की सुरक्षा करने में सफलता पाई और जेम्स द्वारा लगाये गये 'अतिरिक्त करों' का निरन्तर विरोध किया परन्तु अब तक भी राजा (Composition) और पार्लियामेण्ट के बीच झगड़े के मुख्य प्रश्नों का हल नहीं निकला। इसरे यह स्पष्ट था कि इन प्रश्नों का उत्तर जेम्स के पुत्र चार्ल्स से मँगा जायेगा।

हमरे विचारों के अनुसार जेम्स और पार्लियामेण्ट का संबंध धीरे-धीरे इस प्रकार बिगड़ता चला गया है:— ट्यूडर-काल से अधिकारों के विषय में पार्लियामेण्ट राजा की साझेदारी थी और उस साझेदारी में राजा की स्थिति श्रेष्ठ थी। परन्तु अब इंगलैण्ड की आर्थिक उन्नति के कारण पार्लियामेण्ट के सदस्यों में बड़प्पन आ गया था। वे अब शासन में राजा से समानता चाहते थे। परन्तु जेम्स एक हठी था और राजा के अधिकारों पर बल देता था। वह पार्लियामेण्ट को शासन में समान अधिकार देने को तैयार न था। 1603 ई० में प्यूरिटनों की संख्या लोक-सभा में अधिक न थी परन्तु जिस प्रकार जेम्स ने प्यूरिटन-वर्ग से व्यवहार किया वे जेम्स के विरोध में पार्लियामेण्ट का प्रयोग कर सके। धर्म-सुधार राजा के द्वारा ही सम्भव था क्योंकि राजा ही इंगलैण्ड के चर्च का प्रधान था। इस कारण जब प्यूरिटनों ने स्वेच्छा से राजा को धर्म-सुधार के लिए तैयार न पाया तो उन्होंने पार्लियामेण्ट के माध्यम से राजा को तंग करना आरम्भ किया; इस प्रकार जेम्स के हठ ने प्यूरिटनों के विरोध को बढ़ा दिया और धीरे-धीरे उसकी संख्या पार्लियामेण्ट में बढ़ती गयी। इस प्रकार धर्म राजा और पार्लियामेण्ट के बीच झगड़े का एक बड़ा कारण बन गया। जेम्स को आरम्भ से ही आर्थिक कठिनाइयाँ थी। एलिजाबेथ ने खजाने में केवल 200 पौण्ड छोड़े थे। मुद्रा की कीमत गिर जाने से वस्तुओं की कीमतें बढ़ गयी थी। राजा और पार्लियामेण्ट के बीच एक ऐसी स्थिति बन गयी जिसमें संसद ने केवल कानून और स्वतन्त्रता की रक्षा को ही प्रमुख समझा और उसकी रक्षा के लिए राजा का विरोध करना आवश्यक माना जबकि राजा सदैव यह अनुभव करता रहा कि पार्लियामेण्ट का उद्देश्य शासन में सहयोग करना नहीं बल्कि केवल उसके अधिकारों पर प्रहार करना है। इस प्रकार, धन और कर-व्यवस्था जेम्स और संसद में झगड़े का मुख्य कारण बन गये।